अतुल्य!भारत

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश पर्यटन

अयोध्या

AYODHYA

HINDI

SCAN TO DOWNLOAD
DIVY AYODHYA
MOBILE APPLICATION

Scanned with OKEN Scanner

श्री राम की पावन नगरी अयोध्या

'अयोध्या' नाम राजा आयुध से आया है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे श्री राम के पूर्वजों में सबसे पहले थे। प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं को अपने पार्श्व में समेटे भगवान श्रीराम की जन्मभूमि तथा धार्मिक-आध्यात्मिक केंद्र अयोध्या भारत और शेष विश्व को सन्मार्ग दिखाने वाला द्वार है। सरयू के तट पर आज दिव्यता की अद्भुत छटा बिखेरते इस प्राचीनतम नगर को ब्रह्मा के मानस पुत्र मनु ने बसाया था। समय के थपेड़ों से कभी बिखरता तो कभी ओजस्वी शासकों के प्रयासों से संवरता यह नगर प्राचीन विश्व का सम्पूर्ण इतिहास समेटे हुए है। वेदों में इसे ईश्वर की नगरी कहा गया है। भारत के सात सबसे महत्वपूर्ण तीर्थों/ पुरियों में अयोध्या नगर का नाम सबसे ऊपर है। पौराणिक इतिहास में पवित्र सप्त पुरियों का वर्णन कुछ इस प्रकार किया गया है-

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका
। पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।।

इसका अर्थ है कि अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांचीपुरम, उज्जैन एवं द्वारिका, ये सात पुरियां मोक्षदायी हैं। स्कंदपुराण में अयोध्या का अर्थ कुछ इस

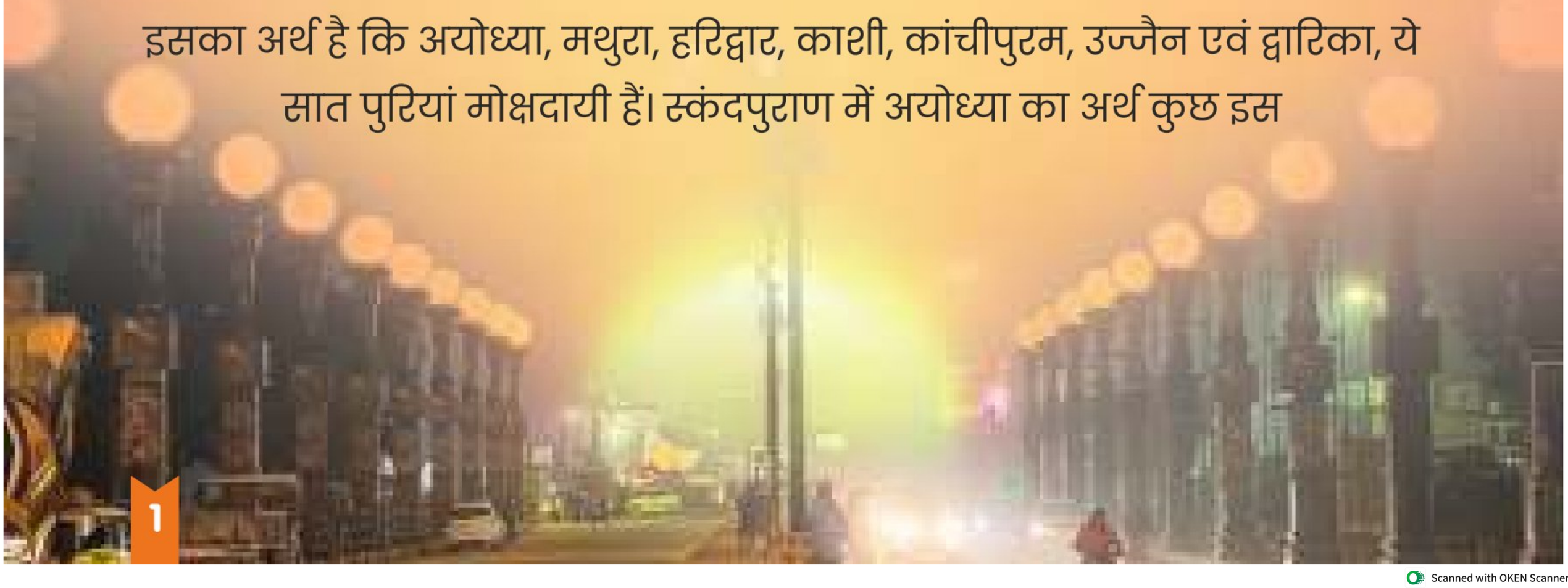

Scanned with OKEN Scanner

तरह दर्शाया गया है- अयोध्या अ कार ब्रह्म, य कार विष्णु तथा ध कार रुद्र का स्वरूप है।

अयोध्या की बहुलता इस तथ्य में देखी जा सकती है कि इसका उल्लेख न केवल रामायण और रामचरितमानस सहित महान हिंदू धर्मग्रंथों में मिलता है, बल्कि जैन और बौद्ध धर्मग्रंथों में भी इसका बहुत महत्व है। यह 24 जैन तीर्थंकरों में से पांच का जन्मस्थान माना जाता है। जैन ग्रंथों में अयोध्या को इक्ष्वाकुभूमि कहा गया है। इक्ष्वाकु वंश के सूर्यवंशी राजाओं से लेकर मौर्य, नंद और गुप्त राजवंशों तक, यह पवित्र भूमि भारत के कुछ महान साम्राज्यों के शासन की गवाह रही है।

Scanned with OKEN Scanner

त्रेतायुग के चौथे चरण में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जन्म अयोध्या में इसी स्थान पर हुआ। उन्होंने अपना बाल जीवन यहीं व्यतीत किया।

सनातन धर्म के अनुयायियों के लिए यह स्थान सर्वोपरि है। वर्षों से विवादित रहे इस स्थल को वर्ष 2019 माह नवम्बर में देश की सर्वोच्च न्यायालय द्वारा भगवान राम की जन्मभूमि होना स्वीकार किया गया। वर्तमान में भव्य राम मंदिर का निर्माण कार्य आरम्भ है।

Scanned with OKEN Scanner

कनक भवन

कनक भवन अयोध्या के मंदिरों में एक महत्वूपर्ण मंदिर है। इस भव्य मंदिर को 200 वर्ष पूर्व ओरछा टीकमगढ की रानी वृषभानु कुंवरि ने बनवाया था। इस मंदिर में राम, सीता और लक्ष्मण की मूर्तियां स्थापित हैं। एक पौराणिक कथा के अनुसार यह मंदिर कैकेयी ने सीताजी को उनकी मुंह दिखायी में भेट किया था। मंदिर के आंगन में एक कुंआ है, जिसका नाम सीता-कूप है। मंदिर के ऊपरी भाग में एक शयनकक्ष है, जिसमें चारों भाइयों के पैरों के निशान चांदी की पत्ती पर बने हैं। इसी भवन में स्थित मन्दिर में श्री राम और किशोरी जी की दिव्य प्रतिमाएं स्थापित हैं।

कनक भवन

Scanned with OKEN Scanner

नागेश्वरनाथ मंदिर

अयोध्या के मन्दिरों में इस मन्दिर का विशेष महत्व है। यह मन्दिर राम की पैडी पर स्थित है। लोगो की धारणा है कि इस मन्दिर का निर्माण महाराजा कुश जो कि भगवान राम के पुत्र थे, ने किया था। यहां महाशिवरात्रि का पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जाता है।

नागेश्वरनाथ मंदिर

Scanned with OKEN Scanner

हनुमान गढ़ी

महाराजा विक्रमादित्य का बनवाया हुआ हनुमान जी का प्राचीन मंदिर जब विनष्ट हो गया तो लोग उस स्थान को हनुमान टीला कहने लगे। वर्तमान हनुमानगढ़ी का निर्माण नवाबों के समय में टिकैत राय ने कराया था। यह मंदिर राम जन्मभूमि के काफी निकट स्थित है। हनुमान जी के इस मंदिर का विशेष महत्व है। मान्यता है कि राम जन्मभूमि में श्री राम के दर्शन से पूर्व हनुमान गढ़ी में हनुमान जी के दर्शन अनिवार्य हैं।

हनुमानगढ़ी

Scanned with OKEN Scanner

छोटी देवकाली मन्दिर

यह बड़ी प्राचीन काल की गिरिजादेवी हैं, जिनका श्री जानकी जी अपने नैहर जनकपुर में नित्य पूजन किया करती थीं। जब श्री जानकी विवाहोपरान्त अयोध्या आने लगीं तो अपने साथ अपनी प्रिय पूज्य गिरिजा देवी जी को भी अयोध्या लेती आयीं। महाराजा दशरथ जी ने सप्तसागर के निकट एक सुन्दर मन्दिर बनवाकर उसी में विधिवत् उसकी स्थापना करायी। श्री जानकी जी नित्य प्रातः काल अपने महल से आकर सप्तसागर में मार्जन करके इनका पूजन किया करती थीं। इनके दर्शन व पूजन से मनोकामना की सिद्धि होती है।

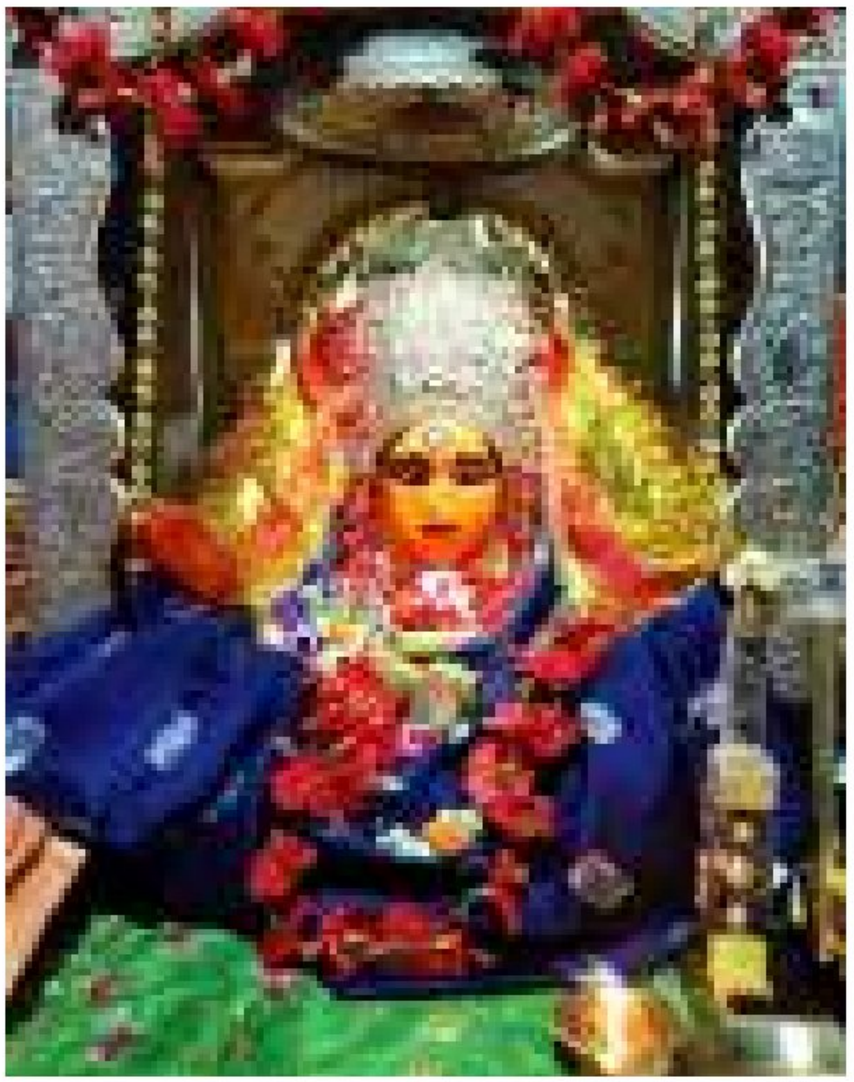

छोटी देवकाली मन्दिर

मतगजेंद्र मंदिर

रामकोट में स्थित भगवान मतगजेंद्र का ऐतिहासिक मंदिर है जिन्हें अयोध्या का कोतवाल भी कहा जाता है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार भगवान राम जब लंका पर विजय प्राप्त कर पुष्पक विमान से अयोध्या लौटे थे तो उनके साथ वानर सेना समेत राक्षस जाति के विभीषण और उनके पुत्र भी अयोध्या आए थे. अयोध्या में भगवान राम के साथ काफी समय व्यतीत करने के बाद बाकी सभी लोग अपने-अपने घर लौट गए, लेकिन हनुमानजी, और विभीषण के पुत्र मतगजेंद्र भगवान राम की सेवा करने के लिए अयोध्या में ही रुके थे।

Scanned with OKEN Scanner

काले राम जी का मन्दिर

नागेश्वर नाथ मन्दिर से सटा हुआ कालेराम जी का ट्रस्ट मन्दिर है। इस मन्दिर में विक्रमादित्य कालीन प्राचीन मूर्तियां हैं जो प्राचीन जन्मभूमि स्थल पर प्रतिष्ठित थी।

काले राम जी का मन्दिर

Scanned with OKEN Scanner

मणि पर्वत

यह स्थान श्री जानकी जी का क्रीड़ा स्थल है। इसका प्राचीन नाम मणिकूट एवं मणि पर्वत है। यहां श्रावण शुक्ल तीज को झूलनोत्सव का सुन्दर मेला होता है। उस दिन अयोध्या भर के मन्दिर के भगवान यहां पर झूला झूलने आते हैं।

मणि पर्वत

Scanned with OKEN Scanner

लक्ष्मण किला

मोक्षदायिनी सरयू नदी के तट पर लक्षमण किला स्थित है। इसी स्थान पर रहकर लक्ष्मण जी अयोध्या की रक्षा करते थे। लक्षमण किला राम की पैड़ी के समीप स्थित है। रसिक संप्रदाय के संत स्वामी युगलानन्द पारण जी महाराज, निर्मली कुंड पर तप करते थे। उनके स्वर्गवासी होने के उपरांत कालांतर में दीवान रीवाँ दीनबंधु ने इस स्थान पर एक विशाल मंदिर बनवाया, जो आज भी विद्यमान है।

गुरुद्वारा नजरबाग जी

गुरुद्वारा नजरबाग का इतिहास अत्यधिक प्राचीन है। यह गुरुद्वारा राजा मान सिंह द्वारा नजराने में दी गई भूमि पर निर्मित है। इसी कारण इस क्षेत्र का नाम नजर बाग पड़ा।

चक्रहारजी विष्णु मन्दिर

अयोध्या में गुप्तार घाट के निकट स्थित इस मंदिर में प्रभु श्री राम के पद चिन्ह विराजमान है | भगवान् विष्णु की चक्र पकडे हुए एक बहुत ही सुन्दर प्रतिमा भी यहाँ स्थापित है | दूर दूर से भक्तजन इस मंदिर में दर्शन करने आते है |

Scanned with OKEN Scanner

क्षीरेश्वर नाथ महादेव मंदिर

अयोध्या में नागेश्वर नाथ मंदिर के समीप क्षीरेश्वर नाथ महादेव मंदिर की भी बड़ा महत्व है। प्रचलित किवदंतियों के अनुसार इस मंदिर की स्थापना चक्रवर्ती नरेश महाराज दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ से पहले कराई थी। यहां उन्होंने भगवान भोलेनाथ का क्षीरान्न (दूध व चावल की खीर) का अभिषेक कराया था। कहा जाता है कि यह अभिषेक इतना विशाल था कि अभिषेक के पदार्थ का विशालतम कुंड बन गया जिसका नाम क्षीरसागर पड़ा।

कौशलेश सदन

यह मंदिर कटरा मोहल्ले में स्थित है। अयोध्या स्थित रामानुजी वैष्णवों की तिलंग शाखा के प्रमुख मंदिरों में यह मंदिर अद्वितीय है।

लव कुश मन्दिर

भगवान राम के पुत्रों, लव व कुश के नाम पर निर्मित इस मंदिर में लव और कुश की मूर्ति के साथ महर्षि वाल्मीकि जी की प्रतिमा भी स्थापित है। इसके समीप ही अंबरदास जी राम कचहरी मंदिर, जगन्नाथ मंदिर तथा रंग महल मंदिर हैं, जो अयोध्या के प्रमुख दक्षिण भारतीय मंदिरों में गिने जाते हैं।

लव कुश मन्दिर

Scanned with OKEN Scanner

विजय राघव मन्दिर

यह मंदिर विभीषण कुण्ड जाने वाले मार्ग पर स्थित है। इसकी स्थापना 1915 ईस्वी में की गई थी। आचारी संप्रदाय के तिलंग शाखा के अयोध्या स्थित मंदिरों में इसका प्रमुख स्थान है।

महारानी हो पार्क

"महारानी हो"

प्राचीन कोरियाई राज्य कारक के संस्थापक राजा किम सू-रो की पत्नी महारानी हो अयोध्या की रहने वाली थीं। कोरियाई (वर्तमान में दक्षिण कोरिया) के इतिहास के अनुसार महारानी हो जिनका वास्तविक नाम सूरीरत्ना था, लगभग 2000 वर्ष पूर्व कोरिया चली गई थीं और अपने पिता के स्वप्न को साकार करने के लिए किम सू-रो से विवाह कर वहीं की होकर रह गईं। महारानी हो का स्मारक अयोध्या में सरयू किनारे स्थित है। कोरियाई इतिहास के अनुसार अयोध्या से राजकुमारी सूरीरत्ना कोरिया पहुंचीं तथा राजा किम से विवाह किया। यहां उनका नाम महारानी हो पड़ा।

Scanned with OKEN Scanner

रत्न सिंहासन (राजगद्दी)

रत्न सिंहासन कनक भवन के निकट स्थित है। यहा पर भगवान राम का राज्याभिषेक हुआ था। भगवान राम और सीता की मूर्तियां काले पत्थर में देखने योग्य हैं। भगवान राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, विभीषण, गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र सुगीव्र और अंगद की मूर्तियाँ भी हैं। इस स्थान को राजगद्दी कहा जाता है।

दन्तधावन कुंड

हनुमानगढ़ी क्षेत्र में ही दन्तधावन कुंड है जहां श्रीराम अपने भाइयों के साथ अपने दांतों की सफाई कर कुल्ला करते थे। इसे ही राम दतौन भी कहते हैं। इस कुंड में कई दुर्लभ प्रजाती के कछुए तैरते रहते हैं।

दन्तधावन कुंड

Scanned with OKEN Scanner

वाल्मीकि रामायण भवन

भगवान श्रीराम की जन्मभूमि में आदि कवि वाल्मीकि की विरासत को भी पूरे गौरव के साथ सहेजा गया है। मणिरामदास की छावनी स्थित वाल्मीकि रामायण भवन एक ऐसा मंदिर है जहां सफेद संगमरमर से बने सभागार की भीतरी सतह पर वाल्मीकि रामायण के सभी 24 हजार श्लोक अंकित है। यह भवन लगभग एक दर्जन स्तंभों पर टिका है और गर्भगृह में भगवान राम के पुत्र लव और कुश की मूर्तियां रखी गई हैं। इन्हीं के साथ आदि कवि महान ऋषि वाल्मीकि की भव्य प्रतिमा भी स्थापित है। यह दिव्य भवन अयोध्या की आध्यात्मिक भव्यता का परिचायक है।

वाल्मीकि रामायण भवन

Scanned with OKEN Scanner

तुलसी स्मारक भवन

मानस की रचना प्रारम्भ करने के उपरान्त गोस्वामी तुलसी दास जी काशी चले गये और वहीं पर निवास करने लगे। परिणामतः यह स्थान रिक्त था। सम्वत् 1631 की नवमी तिथि की सोमवार को सरयू तट पर राम घाट के निकट मानस की रचना प्रारम्भ हुयी थी, इसी स्थान पर गोस्वामी तुलसी दास जी की स्मृति में तुलसी स्मारक भवन का निर्माण किया गया।

तुलसी स्मारक भवन

Scanned with OKEN Scanner

राम कथा संग्रहालय

तुलसी स्मारक भवन में स्थित राम कथा संग्रहालय में देश के विभिन्न संग्रहालयों में संग्रहित राम कथा से संबंधित विभिन्न प्रकार के चित्र, हाथी दांत के मुखौटे, प्राचीन दर्शनीय वस्तुएं तथा राम कथा से संबंधित सामग्रियों के चित्र संग्रहित हैं।

राम कथा संग्रहालय

Scanned with OKEN Scanner

राम की पैड़ी

सरयू नदी के तट पर स्थित राम की पैड़ी अयोध्या में धार्मिक महत्व रखने वाले विशेष घाटों की एक श्रंखला है। वर्ष 1984-85 में राम की पैड़ी का निर्माण हुआ। इस पैड़ी में सरयू नदी से पानी निरन्तर प्रवाहित होता रहता है। श्रद्धालुओं में ऐसी मान्यता है कि यहाँ स्नान करने से पाप धुल जाते हैं

राम की पैड़ी

Scanned with OKEN Scanner

जानकी घाट

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार श्री जानकी जी अपनी परिचारिकाओं के साथ सरयू तट पर आती थीं। उनकी स्मृति के रूप में जानकी घाट प्रसिद्ध है। उस समय सरयू इसी स्थान से प्रवाहित होती थी।

जानकी घाट

गुरुद्वारा ब्रह्मकुण्ड जी

ब्रह्मकुण्ड घाट के निकट ब्रह्मदेव जी का एक छोटा सा मन्दिर है। जिसमें ब्रह्मा जी की एक चतुर्भुजी मूर्ति स्थापित है। मान्यता है कि गुरुनानक देवी जी को चतुरानन ब्रह्मा जी के साक्षात् दर्शन यहीं प्राप्त हुये थे। गुरु तेगबहादुर जी एवं गुरु गोविन्द सिंह जी का भी पावन प्रवास अयोध्या नगरी में हुआ था। घाट के पास विशाल गुरुद्वारा स्थित है, जहां प्रतिवर्ष सिख यात्री दर्शन के लिये आते हैं।

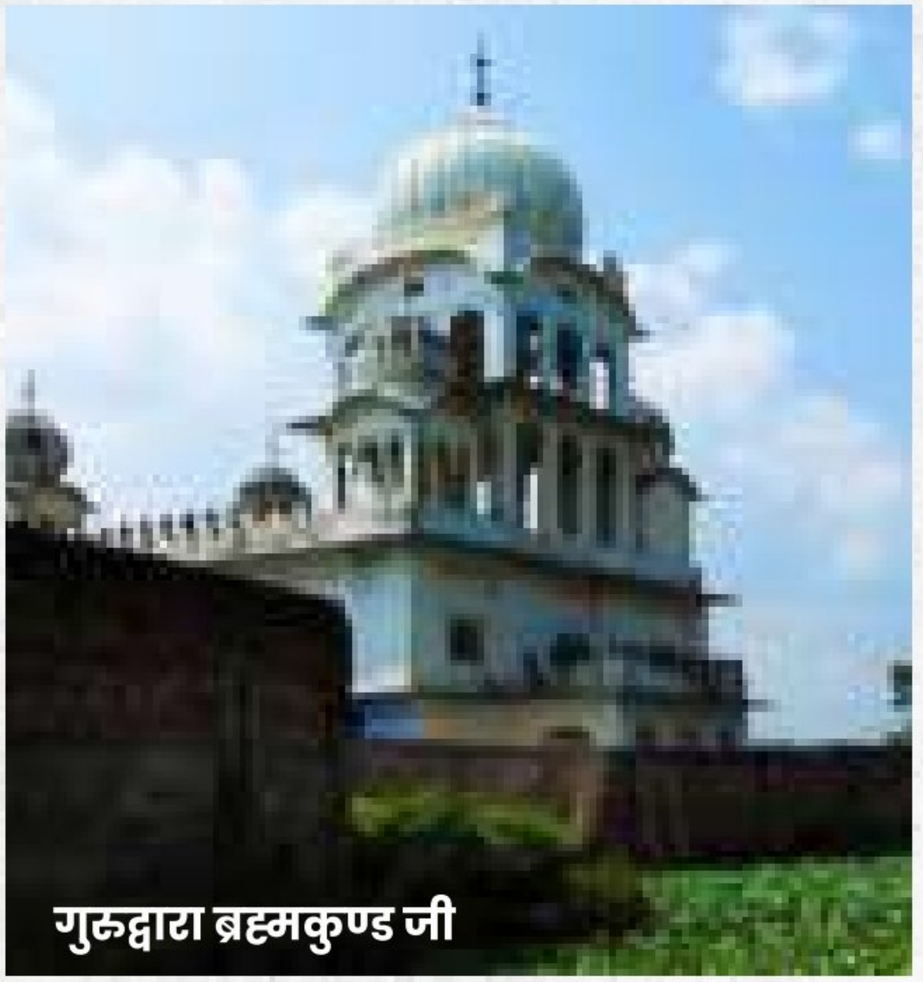

गुरुद्वारा ब्रह्मकुण्ड जी

Scanned with OKEN Scanner

त्रेता के ठाकुर

कुल्लू के परम भागवत् राजा राघवेन्द्र नाथ जी प्रायः यह कहा करते थे कि अयोध्या सोने की है परन्तु उनके मुख्यमंत्री को विश्वास न होता था। एक बार कुल्लू राज्य का कोई यात्री अयोध्या रामनवमी स्नान करने आने वाला था। उससे राजा ने कहा कि तुम अयोध्या के किसी मन्दिर की एक ईंट उखाड़ कर उसे कपड़े में लपेट कर मेरे लिये लेते आना। वह यात्री अयोध्या आया और यहां से वापस जाते समय किसी मन्दिर की एक ईंट उखाड कर लेता गया। जब वह ईंट भरे दरबार में राजा के सामने गयी (जिसे स्वयं मन्त्री ने खोला) तो वह शुद्ध सोने की निकली । राजा राघवेन्द्रदास ने उस सोने की ईंट की एक सुन्दर भगवान की मूर्ति बनवाई और उसे लेकर रानी तथा मन्त्री सहित अयोध्या आये और सरयू के किनारे एक सुन्दर मन्दिर बनवा कर उसमें उस मूर्ति को स्थापित कर दिया। त्रेता युग की विभूति का अद्भुत चमत्कार होने के कारण उस मूर्ति (विग्रह) का नाम त्रेतानाथ जी रखा गया।

त्रेता के ठाकुर

Scanned with OKEN Scanner

राम कथा पार्क

उ0प्र0 पर्यटन द्वारा नया घाट क्षेत्र रामकथा पार्क का निर्माण कराया गया है। इस पार्क में भगवान राम से सम्बन्धित सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मंचन हेतु मंच एवं दर्शक दीर्घा का निर्माण कराया गया है।

राम कथा पार्क

गुप्तार घाट

गुप्तार घाट सरयू नदी के तट पर स्थित है। प्राचीन समय में यह स्थान गुप्तहरि के नाम से प्रसिद्ध था। एक प्रसिद्ध मान्यता के अनुसार भगवान श्री राम इसी स्थान पर मोक्षदायिनी सरयू में अंर्तध्यान हो गए थे। गुप्तारगढी किला, गुप्तहरि मंदिर, विष्णुहरि मंदिर एवं राम जानकी मंदिर यहां के दर्शनीय स्थल हैं। कार्तिक के महीने में इस घाट पर स्नान करने का विशेष महत्व है।

गुप्तार घाट

Scanned with OKEN Scanner

जैन श्वेताम्बर मन्दिर

अयोध्या पाँच जैन तीर्थंकरों की जन्मभूमि के रूप मे प्रसिद्ध है। यहां जैन धर्म के कई मंदिर स्थापित हैं। उनमे से एक जैन श्वेताम्बर मंदिर का जीर्णोद्धार जैन सम्प्रदाय द्वारा वर्ष 2000 में कराया गया। इसमें तीर्थन्कर अजित नाथ, सुमतिनाथ, अभिनन्दननाथ, अनन्तनाथ की पद्मासन मुद्रा में प्रतिमाएं स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त 19 कल्याण के चरण चिन्ह बनाये गये हैं।

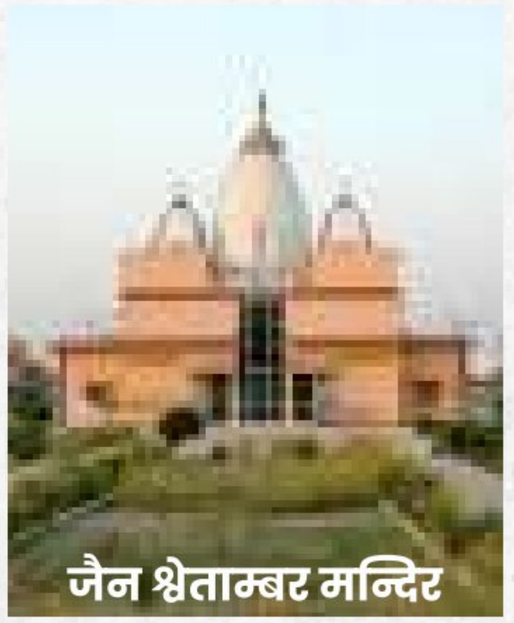
जैन श्वेताम्बर मन्दिर

गुलाब बाड़ी

गुलाब बाड़ी में नवाब शुजाउद्दौला की स्मृति में एक मस्जिद बनवायी गयी थी। एक समय में इस उद्यान में नाना प्रकार के गुलाबों की खेती होती थी और तभी से इसका नाम गुलाब बाड़ी पड़ा।

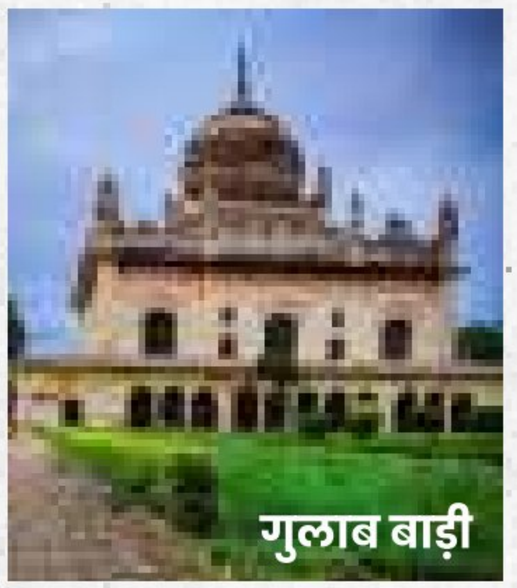
गुलाब बाड़ी

बहू बेगम का मकबरा

बहू-बेगम (अम्मतउजजहरा) की मृत्यु सन् 1816 में हुई थी। उनके मृत्यु के बाद इस मकबरे का निर्माण उनके खास दरबारी दराब अली खां द्वारा सन् 1818 में प्रारंभ करवाया गया। उन्होंने अपने मृत्यु से पहले ही अपने मकबरे के निर्माण हेतु तीन लाख रूपये की धनराशि रख दी थी। स्थापत्य कला की दृष्टि से बहू बेगम का मकबरा ईरानी चारबाग शैली में बनाया गया है।

बहू बेगम का मकबरा

Scanned with OKEN Scanner

अयोध्या के अन्य प्रमुख स्थान

- सुग्रीव किला
- ससिया राम किला
- जानकी महल बडा स्थान रामकोट
- राम गुफा रानो पाली
- हनुमान गुफा
- दशरथ महल
- राधा कृष्ण मंदिर रानो पाली
- गोकुलधाम
- अशर्फी भवन मंदिर
- राज द्वार मंदिर
- मोतिहारी मंदिर
- मणिराम छावनी
- छोटी छावनी
- दिगंबर अखाड़ा
- कारसेवापुरम कार्यशाला मंदिर
- राम जानकी मंदिर

मेले, त्यौहार और परिक्रमा

- दीपोत्सव - अयोध्या के पुरातन, ऐतिहासिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व को देखते हुए वर्ष 2017 से दिवाली से एक दिन पूर्व उत्तर प्रदेश सरकार ने दीपोत्सव को व्यापक आयाम दिया। राज्य के पर्यटन विभाग के प्रयासों से सरयू के घाटों पर अब प्रत्येक वर्ष लाखों दीप जलाने का कीर्तिमान बन रहा है जो गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज होता है।
- चौरासी शुक्ल रामनवमी पर चौरासी कोसी परिक्रमा
- कार्तिक शुक्ल नवमी या अक्षय नवमी को चौदह कोसी परिक्रमा
- कार्तिक एकादशी पर पंचकोसी परिक्रमा
- अर्न्तगृही परिक्रमा- नित्यप्रति यह परिक्रमा वशिष्ठ कुण्ड से प्रारंभ होकर हनुमानगढ़ी से दक्षिण की ओर होते हुए

Scanned with OKEN Scanner

श्री वशिष्ठ आश्रम पर समाप्त होती है। इस परिक्रमा में अयोध्या के सभी प्रमुख मंदिर और धर्मस्थल शामिल हैं।

- चैत्र राम नवमी (मार्च-अप्रैल)
- श्रावण झूला मेला (जुलाई-अगस्त)
- कार्तिक पूर्णिमा (नवंबर)
- श्री राम विवाह उत्सव-रामायण मेला (नवंबर-दिसंबर)
- बालार्क तीर्थ (सूर्यकुंड) मेला
- भरतकुंड मेला
- गुप्तार घाट मेला
- मखभूमि (मखौड़ा) मेला
- सूकरक्षेत्र मेला

आसपास भ्रमण के स्थान

बालार्क तीर्थ, सूर्य कुंड (लगभग 4 किमी)
चौदह कोसी परिक्रमा मार्ग पर स्थित यहां राजा दर्शन सिंह ने सूर्य देव का मंदिर और विशाल सूर्य कुंड बनवाया था। यहां हर साल मेला भी लगता है।

नंदीग्राम, भरतकुंड (लगभग 14 किमी)
अयोध्या सुल्तानपुर रोड पर स्थित, मान्यता के अनुसार, भरतजी ने श्री राम के वनवास से लौटने के लिए यहां तपस्या की थी। तभी से इसका नाम नंदीग्राम (भरत कुंड) पड़ा। यहां पिंडदान की अत्यधिक मान्यता है। यहां भरतजी का एक मंदिर भी है।

मखौड़ा, मखभूमि (लगभग 27 किमी)
ऐसा माना जाता है कि राजा दशरथ ने यहीं पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया था।

श्रृंगी ऋषि आश्रम (लगभग 32 किमी)
अयोध्या के मया बाजार-टांडा मार्ग पर महबूबगंज में सरयू नदी के तट पर श्रृंगी ऋषि का प्राचीन मंदिर स्थित है। यहां हर साल रामनवमी पर मेला लगता है।

Scanned with OKEN Scanner

वाराही देवी, उत्तरी भवानी मंदिर (45 किमी) यहां वाराही देवी का प्राचीन मंदिर है, जो उत्तरी भवानी के नाम से प्रसिद्ध है।

स्वामी नारायण मंदिर, छपिया (40 किमी)

स्वामी नारायण जी का मंदिर छपिया में स्थित है। स्वामीनारायण का जन्म 1781 में उत्तर प्रदेश के छपिया में घनश्याम पांडे के रूप में हुआ था। 1792 में, उन्होंने 11 साल की उम्र में नीलकंठ वर्णी नाम अपनाकर पूरे भारत में सात साल की तीर्थयात्रा शुरू की। इस यात्रा के दौरान, उन्होंने कल्याणकारी गतिविधियाँ कीं और इस यात्रा के 9 साल और 11 महीने के बाद, वह 1799 के आसपास गुजरात राज्य में बस गए। 1800 में उन्हें गुरु स्वामी रामानंद द्वारा उद्धव संप्रदाय में शामिल किया गया और उन्हें सहजानंद स्वामी नाम दिया गया।

धोपाप (लगभग 70 किमी)

सुल्तानपुर जिले मे गोमती नदी के तट पर स्थित यह स्थान पौराणिक कथाओं से जुड़ा है। गंगा दशहरा और रामनवमी पर यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं।

बिजेथुआ महावीरन मंदिर (लगभग 80 किमी)

सुल्तानपुर -वाराणसी मार्ग पर पौराणिक कथाओं से जुड़े इस स्थान पर मां कुंड, हत्याहरण तालाब, हनुमान जी का मंदिर देखने लायक हैं।

देवीपाटन (130 किमी)

बलरामपुर जिले से 30 किमी की दूरी पर तुलसीपुर में स्थित देवी शक्तिपीठ अपनी महिमा के कारण प्रसिद्ध है।

श्रावस्ती (155 किमी)

प्रसिद्ध बौद्ध स्थल, जहाँ भगवान बुद्ध ने कई वर्षा ऋतु बितायीं

कतर्नियाघाट (160 किमी)

यह उत्तर प्रदेश के लोकप्रिय वन्य जीव क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध स्थान है।

Scanned with OKEN Scanner

कैसे पहुंचे-

हवाई मार्ग से:

- महर्षि वाल्मीकि अतंरराष्ट्रीय हवाई अड्डा अयोध्या धाम
- गोरखपुर हवाई अड्डा (140 किमी)
- चौधरी चरण सिंह हवाई अड्डा, लखनऊ (150 किमी)

ट्रेन से:

- अयोध्या धाम जंक्शन

सड़क मार्ग से:

- अयोध्या यूपी एसएच 9, यूपी एसएच 15, यूपी एसएच 30ए, एनएच 27, एनएच 233 बी और 135 ए के माध्यम से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है।

Scanned with OKEN Scanner

मुख्य आकर्षण

- दिनांक 14 से 24 मार्च, 2024 तक अयोध्या में 70 दिन तक पांच बड़े मंचों पर लगभग 5000 से अधिक कलाकारों की प्रस्तुतियां।
- उक्त अवधि में 15 से अधिक देशों की रामलीलाओं की प्रस्तुतियां।
- दिनांक 14 जनवरी से 22 जनवरी, 2024 तक प्रदेश सम्पूर्ण राम मंदिरों/ हनुमान मंदिर/ वाल्मीकि मंदिर में भजन कीर्तन एवं रामायण पाठ के कार्यक्रम।
- उत्तर प्रदेश के 25 तथा अन्य प्रदेशों की लगभग 10 कुल मिलाकर 35 प्रदेशों की रामलीलाओं की प्रस्तुतियां।
- 22 जनवरी, 2024 को 2500 लोक कलाकारों द्वारा 100 लघु मंचों के माध्यम से सांस्कृतिक शोभा यात्रा का आयोजन।

Scanned with OKEN Scanner

SCAN TO WATCH
UP TOURISM FILMS

SCAN TO DOWNLOAD
E-BOOK

DIRECTORATE OF TOURISM, UTTAR PRADESH

C-13, Vipin Khand, Gomti Nagar, Lucknow 226010 (UP) India.
PH: +91-522-4061369
E-mail: dg-upt@up.gov.in, Website: www.uptourism.gov.in

UttarPradeshTourism
UttarPradeshTourism
uptourismgov
UttarPradeshTourism

IMPORTANT TELEPHONE NUMBER

Scanned with OKEN Scanner